अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वित्तीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र के अनुसन्धान की प्रक्रिया में साहित्य का पुनरावलोकन महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंर्तगत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है।

सम्बधित साहित्य सें तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं, शोधप्रश्नो के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नही बढाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञान न हो, कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि सें कार्य किया गया हैं। तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता हैं, और न ही इस दिशा में सफल हो सकता हैं।

गुडबार तथा स्केट्स कहते है –'एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजो से परिचित होता रहें, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में सम्बन्धित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।'

2.2 शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व –

1. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक हैं कि अनुसन्धान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर हैं। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है।
2. पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसन्धान कर्ता को अपने अनुसन्धान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सके।
3. पूर्व अनुसन्धानों के अध्ययन सें अन्य सम्बधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसन्धानों को नवीन दशाओं में लाने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अन्य अनुसन्धान कर्ता द्वारा यदि वह अनुसन्धान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा।

अतः उपर्युक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता हैं कि, साहित्य के अवलोकन का अनुसन्धान में बडा महत्व है।

2.3 पूर्व में हुए शोध कार्य

प्रस्तुत समस्या से सम्बधित साहित्य का अवलोकन इस प्रकार है। विचारों की अभिव्यक्ति में भाषा की भूमिका का परीक्षण पियाजे (1952) तथा ल्यूरिया (1961) ने किया था। परन्तू संबंध को पूर्णतः प्रकाश में नही लाया गया था । डेबुन (1963) के अनुसार जो भी सुना व बोला जाता है। वह पठन व लेखन को प्रभावित करता हैं, इस बात का अध्ययन किया गया कई लेखकों नें श्रवण भाषा विकास को निम्न श्रेणियों में बाटा हैं ।

अ) आंतरिक भाषा ।

ब) ग्रहण की गयी भाषा ।

क) भाषा को व्यक्त करना ।

यह श्रेणीबध्द व्यवस्था भाषा की कमियों कों दूर करने में उपयोगी सिध्द हुई। इसका अध्ययन मैककार्थ (1964) शैकेल बुच (1957) बुड (1964) एवं माइकल वस्ट (1965) द्वारा किया गया है। स्प्रेलिन (1967) ने सुझाव दिया कि कुछ बच्चे दो प्रकार की ध्वनियों में अंतर नही कर पाते हैं। और कुछ बच्चे एक ही वाक्य के विभिन्न अर्थो को अलग अलग नही कर पाते हैं।

पठन संबंधी शोध कार्य में बहुत सें विद्यार्थियों को मुख्य रूप से भाषा पढने में कठिनाई होती है, जो कि उनकी शैंक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं किर्क क्लिबेन लर्नर (1978) के अनुसार पढने से बौध्दिक और राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती हैं। बच्चों में पढने सें ज्ञान का विकास होता हैं। जो कि उनकी सफलता के लिए आवश्यक हैं।

❖ **आर अग्निहोत्री (1978)** – नें छोटे बच्चों में भाषा विकास विषय पर पी. एच.डी. स्तर पर शोधकार्य किया इन्होंने यह अध्ययन किया कि भाषा विकास पर विशेषकर सामाजिक, आर्थिक स्तर, लिंग और जन्म जाती का क्या प्रभाव पडता है। इन्होंने, इस अध्ययन के द्वारा यह पाया कि सामाजिक आर्थिक स्तर और लिंग के आधार पर इनके भाषा विकास दर में कोई अन्तर नहीं होता हैं।

इस सन्दर्भ में सिंगलर (1986) का मत ही उचित लगता हैं कि, बच्चों की शिक्षा तथा योग्यता विकास पर माता पिता के सामाजिक स्तर का प्रभाव उतना नहीं पडता, जितना उनकी जीवन शैली और दैंनदिन भाषा प्रयोग और सहायता का पडता हैं ।

❖ **इन्द्रपूरकर** (1968) – ने शोधकार्य किया जिसका विषय था महाराष्ट्र राज्य में चन्द्रपूर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी गलतियों का अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित थे। मौखिक परीक्षण से यह पाया की 8वी के छात्रों के द्वारा शब्दो को बोलने में बार बार गलतियाँ होती हैं। मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया गया की शब्दों के उच्चारण में भी बार बार गलतियाँ होती हैं। लिखित परीक्षण से यह पाया गया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नही लिख पाते हैं।

❖ **एच. सी. नसीम** (1978) – ने में हरियाणा राज्य में कक्षा 5के बच्चों की आधारभूत व्याकरण की जानकारी हेतु जॉच –पडताल का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्येश्य – 1. दस वर्ष तक के विद्यार्थियों की समज में आनेवाले शब्दों की सूची तैयार करना। 2. पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को बच्चों के स्तर उच्च निम्म को ध्यान में रखते हुए श्रेणीबध्द पुस्तके तैयार करने के लिए सक्षम करना। 3. भाषायी ज्ञान में पिछडे हुए विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों को उपचारात्मक परीक्षण तैयार करने के लिए सक्षम करना। निष्कर्ष में यह पाया की –

कक्षा पांच में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों में ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर शुन्य था, और कई ऐसे जिनका 99 प्रतिशत । 20 प्रतिशत से कम कठिनाई स्तर वाले 202 शब्द पाए गये। 298 शब्द ऐसे थे जिनका कठिनाई स्तर 70 से कम था। 20 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक के कठिनाई स्तर वाले 1525 शब्द पाए गये। 1525 ऐसे शब्दों को बताया गया,जो कि 10 वर्ष तक के विद्यार्थियों को पता होने चाहिए।

❖ **अग्रवाल (1981)** – ने पढने की योग्यता के परीक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। उन्होंने पढने की योग्यता शाब्दिक व अशाब्दिक उपलब्धि के बीच सम्बधों का अध्ययन किया हैं। इस अध्ययन में संज्ञानात्मक कारण असंज्ञानात्मक कारकों से अधिक महत्वपुर्ण है।

❖ **बिरकर के. आर. (1989)** – ने 'मराठी और भाषायी सृजनात्मकता व भाषायी क्षमता के बीच संबंधो का परीक्षण का अध्ययन किया। उन्होंने इस अध्ययन के निष्कर्ष मे लडकियों की तुलना में लडकों में भाषायी क्षमता और शाब्दीक सृजनात्मकता अधिक हैं । वाक्यों की रचना प्रकार, भावात्मक तीव्रता, संवाद लेखन, कहानी लेखन,तथा कहानी पूर्ण करना यहॉ तक की कविता रचना तथा कल्पनापूर्ण क्षमता में लडकों व लडकियों में कोई अन्तर नही पाया गया।

❖ **आशा फडके (1988-89)** ने अपने लघुशोध निंबध में 'मराठी माध्यम के कक्षा 5वी से 7वी तक विद्यार्थियों को मराठी विषय के अध्ययन में आनेवाली समस्या का अध्ययन किया'। उन्होने सर्वेक्षण विधि द्वारा निष्कर्ष में यह पाया कि, छात्रों को उच्चारन लेखन एवं बोली भाषा पर उनके वातावरण का प्रभाव होता हैं। छात्रों को उच्चारण के बारे में सही आकलन नहि होता, छात्रों का अवांतर पठन एवं पाठ्यपुस्तक पठन में कमियॉं रहती है। इस निष्कर्ष के कुछ सुझाव निम्नलिखित है। शैक्षिक सामग्री का जादा से जादा वापर शिक्षको ने किया तो व्याकरण विषय में होनेवाली कठिनाईयां कम हो सकती हैं। छात्रों कक्षा में पठन में जादा लक्ष नहीं देते लेकिन कुछ बडे उदाहरण

पठन करने के लिए देने चाहिएं। छात्रों को दैनंदिन परीचय का उदाहरणों का वापर अध्यापन में होना चाहिएं।

❖ **अनुराधा गद्रे (1991-92)** ने एम.एड. में लघुशोध निंबध पुणे विश्वविद्यालय पुणे, में सादर किया। उनका विषय था 'मराठी व्याकरण इस घटक में अध्यापन विधि कि परीणामकता' उद्गामी व अवगामी तथा प्रचलित अध्यापन विधि विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन के उददे्श्य निम्नलिखित है।

1. छात्रों का व्याकरण घटक में अध्ययन कस दुर्लक्ष दुर करना। 2. व्याकरण अध्ययन में छात्रों की रूचि बढाना, इसलिए अध्यापन विधि द्वारा अध्यापन करना। 3. छात्रों में उद्गामी विधि से अध्ययन रूचि का विकास करना। 4. उद्गामी विधि द्वारा छात्रों को इतर विषय में आनेवाली समस्या को दिशा देना। निष्कर्ष में यह पाया गया की, प्रायोगिक समूहों से नियंत्रित समूह का मध्यमान जादा हैं। उद्गामी व अवगामी अध्यापन विधि भाषा व्याकरण अध्यापन में प्रभावशाली सिध्द हुई।

❖ **व्ही म्हस्के (1998-2000)** - नें एम.एड. में लघूशोध निंबध पुणे विश्वविद्यालय पुणे में सादर किया, उनका विषय था 'कक्षा 8 के छात्रों को मराठी भाषा व्याकरण में आनेवाली समस्या की पहचान करना एवं उपाय' इस विषय का अध्ययन किया। इस अध्ययन के अध्ययन के उददे्श्य निम्नलिखित है।

छात्रों का व्याकरण अध्ययन में दुर्लक्ष दूर करना। व्याकरण अध्ययन में छात्रों की रूचि बढाना। पाठ्यपुस्तक सम्बन्धि छात्रों को अनुभव और रूचि सम्बन्धि उदाहारण देकर व्याकरण लेखन का सराव देना। व्याकरण लेखन में छात्रों को कठिनाई दूर करना और उनका आत्मविश्वास बढाना। व्याकरण सम्बन्धि रूची निर्माण कराना।

निष्कर्ष में यह पाया कि, छात्रों को उनकी रूचि रूप उदाहारण देने से उनका व्याकरण लेखन में सुधार पाया गया। व्याकरण में सुक्ष्म बातों कों विद्यार्थी ध्यान में रखते हैं। इसलिए व्याकरण लेखन प्रभावकारी होता हैं। दुर्लक्षित छात्रों के संबंध में अनुसंधान प्रकल्प करने के बाद भी उनकी प्रगती प्रभावकारी नही दिखाई गयी।

❖ **अमिता सिंह (2000)** – नें कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों के उपाय नामक विषय पर अध्ययन किया। और अंत में निष्कर्ष निकाला की विद्यार्थियों को मुहावरें का वाक्य प्रयोग, शब्द से वाक्य बनाना, विश्लेषण, लिंगभेद युक्त लेखन में कठिनाई हैं, अंतः में अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषाओं में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते हैं।

❖ **सौ.दलवी (2004)** – ने अपने लघुशोध निबंध एस.एन.डी. टी.विश्वविद्यालय पुणे में सादर किया। उनका विषय था 'कक्षा 6 के विद्यार्थियों में मराठी भाषा शुध्दलेखन सुधार कार्यक्रम निर्माण एवं उसका प्रभाव का अध्ययन किया'। इस अध्ययन के उददे्श्य थे, शुध्दलेखन सुधार के लिए कार्यक्रम का अध्ययन करना। निर्माण हुये कार्यक्रम प्रभाव का अध्ययन करना। कक्षा 6 के छात्रों के शुध्दलेखन में होनेवाली गलतियों का वर्गीकरण करना।

निष्कर्ष में यह पाया गया कि, गलतियॉ ढुंडकर शुध्दलेखन सुधार के लिए सही कार्यक्रम तयार किया तो अध्यापन करके इष्ट परीणाम होकर शुध्दलेखन में गलतियॉ कम दिखायी गयी। तीनों घटको में अंको सें वृध्दी दिखाई गयी। छात्रों के पूर्व परीक्षण के गलतियॉ का परीणाम तीनों घटको को 49.48 प्रतिशत था, अध्यापन के बाद प्रमाण पश्च परीणाम में 28.05 प्रतिशत हो गया। इससे यह ध्यान

में आता हैं कि अध्यापन कार्यक्रम निर्माण सें छात्रों को शुध्दलेखन में सुधार आया उनके गलतियों का परीणाम कम दिखाई गया।

❖ **अशोक गोलार (2005)** – ने अपने लघुशोध में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 5 के विद्यार्थियों के मराठी भाषा ज्ञान का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला की, कक्षा 5 के विद्यथियों में मराठी भाषा संबंधित लेखन कौशल में बच्चे कई त्रुटियाँ करते है। उनमें मात्राओं की गलती अधिक होती हैं । व्यावहारिक व्याकरण का उचित प्रयोग न कर सकते हैं।

❖ **श्रीमती संध्या सत्रे (2005)** – नें कक्षा 7के विद्याथियों की मराठी भाषा विषय कौशल में आनेवाली कठिनाईयों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 30 बच्चों पर परीक्षण किया। परिणाम स्वरूप यह पाया की पढने में तथा लिखने में बच्चें बहुत गलतियाँ करते हैं। मौखिक रूप सें पठन प्रक्रिया में बच्चें बहुत कमजोर पाए गये। बहुत सें बच्चे, गद्यांश व पद्यांश के वाक्य अच्छी तरह पढ न सकते। बच्चे शब्दो तथा वाक्यों की पहचान ने में भी गलतियाँ करतें हैं। लेखन कौशल में भी व्याकरण नियमों के कमजोरि के कारण विद्यार्थियों में अधिक गलतियां होंती हैं।

❖ **अमित सालुके (2006-07)** – ने एम.एड. में लघुशोध निंबध पुणे विश्वविद्यालय पुणे में सादर किया। उनका विषय था 'कक्षा नवनी के मराठी भाषा पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन'किया। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का वापर किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि, पाठ्यपुस्तक के अंतरंग में मुखपृष्ठ, मलपृष्ठ व सम्बन्धित विषय घटक में चित्र का वापर अछा हुआ। बहिरंग में उद्देश्य से पाठ्यपुस्तक तयार किये थे। पाठ्यांश का ढाचा विषयारूप अछा था। मराठी विषय पाठ्यघटक में गाभाभूत घटक का वापर आशयनाकुल था।

❖ **संतोष अकोलकर (2006-07)** - नें 'कक्षा 4के विद्यार्थियों कि मराठी भाषा योग्यता का निदानात्मक एवं उपचारात्मक अध्ययन किया।' जिसका आधार पूर्व कि कक्षाओं 1,2,3 का अधिगम का विश्लेषण किया और कठिन शब्दों की सूची तैयार की। निष्कर्ष में यह पाया गया कि, - पूर्व कि कक्षाओं में जो विद्यार्थियों गलत शब्द, खराब लिखाई, दोषपूर्ण उच्चारण आदि से थें। अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाएँ न लेने के कारण यह दोष पैदा हुए थे। साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि न लेने या विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में भी उनका असर पडता हैं।

❖ **दिनेश शर्मा (2006)** - नें "कक्षा 7 के विद्यार्थियों को रेखा गणित में होनेवाली अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन" इस विषय पर कार्य किया गया। उनके मुख्य उद्देश्य- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना है।

2.4 उपसंहार

सम्बन्धित साहित्य शोध से ज्ञात होता है कि, भाषा अधिगम संम्बन्धि अनेक शोधकर्तानें अनुसंन्धान कार्य किये है। भाषा अधिगम की भूमिका परीक्षण पियाजे (1952) तथा ल्युरिया (1961) ने किया, परन्तु संबंध को पूर्णत प्रकाश में नही लाया गया। डेबुन (1963) ने जो भी सुना व बोला जाता है, वह पठन को प्रभावित करता है, इस बात का अध्ययन किया गया। इन्द्रपूरकर (1968) नें चन्द्रपूर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 8 के विद्यार्थियों कि भाषा विषय गलतियों का अध्ययन में पाया गया कि, छात्रों को शब्द लिखने में, या बालने में बोलीभाषा प्रभाव के कारण गलतियाँ होती है। आर. अग्निहोत्री (1978) ने भाषा विकास पर सामाजिक आर्थिक स्तर पर लिंग और जन्मजात का प्रभाव इस अध्ययन में पाया गया कि, छात्रों को भाषा विकास में इस घटकों का कोई असर नहीं होता। एच.सी.

नसीम (1981) ने हरियाणा राज्य में कक्षा 5के बच्चों की आधारभूत व्याकरण की जानकारी हेतु जॉच पडताल, इस अध्ययन में पाया कि, बच्चों को परिचित शब्द देकर भी उनका कई शब्दों का कठिनाई स्तर 99 प्रतिशत था पर कई शब्दों का कठिनाई स्तर शुन्य पाया गया। आशा फडके (1988-89) ने मराठी भाषा विषय में 5वी से 7वी तक विद्यार्थियों को आनेवाली समस्या का अध्ययन में यह पाया कि, विद्यार्थी कक्षा में पठन करते समय लक्ष्य नहीं देने के कारण, उच्चारण के बारे में सही आकलन नही होता। अनुराधा गद्रे (1981-82) व व्ही. म्हस्के (1998-2000), ने मराठी व्याकरण में अध्यापन विधि कि परिणामकता का अध्ययन में यह पाया गया कि, अध्यापन विधि मराठी भाषा व्याकरण में प्रभावशाली सिध्द हुई। अमिता सिंह (2000) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन में यह पाया गया कि, मुहावरे, शब्द से वाक्य बनाने, व्याकरण में लिंग बदल युक्त लेखन में कठिनाई होती है। सौ. दलवी (2004) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों में मराठी भाषा शुद्धलेखन सुधार कार्यक्रम का प्रभाव का अध्ययन में पाया कि, शुद्धलेखन सुधार कार्यक्रम से लेखन में गलतियाँ कम होती है। श्रीमती संध्या सत्रे (2005) ने कक्षा 7 के विद्यार्थियों की मराठी भाषा विषय कौशलें में आनेवाली कठिनाईयाँ का अध्ययन में यह पाया गया कि, छात्रों को पढने में तथा लिखने में बहुत गलतियाँ करते है।

पूर्व शोधों के विस्तृत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, मराठी भाषा व्याकरण में अधिक शोध कार्य किए गये। उससे अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले गये। लेकिन लेखन कौशलं के अपघटक शब्दज्ञान, वाक्यरचना,व्यावहारिक व्याकरण व लेखन में क्या अंतर है, तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय में मराठी भाषा विकास किस तरह का है। इसलिए कक्षा 8के विद्यार्थियों की मराठी भाषा अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन करने कि आवश्यकता महसूस होती है।